ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट
"मानवसेवा એ જ ઈશ્વરસેવા"
ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-3 अंक : 31

सहयोग सुल्क : रु. 1 / अगस्त : 2019

दिव्यांग सेतु

संपादक :- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

में भाग्यशाली हूं, मुजे दिव्यांगजनो की सेवा करने का अवसर मीला ।

- प्रधानमंत्री, नरेन्द्र मोदी

भारतका हर दिव्यांग आज अपनी प्रतिभा और शक्ति का प्रदर्शन कर शके ईतना सक्षम हो रहा है ।

- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

औरों के सुख में सुखी होना सिखाती है भारतीय संस्कृति

- मुख्यमंत्री, विजयभाई रुपाणी (गुजरात राज्य)

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

यह प्रीमियम ॐकार फाउन्डेशन द्वारा भरा जाएगा

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

संपादकीय

तुम बेसहरा हो तो किसी का सहारा बनो.
तुम को अपने आप ही सहारा मिल जायेगा.
कश्ती कोई डूबती पहुँचा दो किनारे पे,
तुम को अपने आप ही किनारा मिल जायेगा.

सहारा देने के लिए भी ख़ुदको एक मक़ाम पर पहुंचाना जरुरी है। उसके वास्ते भी सपना देखना पड़ता है। सपना खुली आंख का हो वो बेहद जरुरी है, क्यूंकि आँख बंद कर के देखे हुए सपने आंख खुलते ही बिखर जाते है। 'दिव्यांग सेतु' पत्रिका भी किसीका हौसलें बढाती है किसीको जीने के लिए मनोवैज्ञानिक सहारा बन सकती है। यही उद्देश्य हमारा धीरे धीरे सफल होता दिखाई रहा है।

आप सभी को निवेदन है की इस पत्रिका के बारें में आपके प्रतिभाव हमें भेजिए। हम आपके द्वारा दिया गया सुझाव या विचार पत्रिका में प्रकाशित करेंगे।

पाठकों को यह निवेदन है की 'दिव्यांग सेतु' पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु, आपके आसपास दिव्यांगजनों के अनुलक्ष में हुए कार्यक्रम या कोई दिव्यांग व्यक्ति की जानकारी का ब्यौरा भी आप हमें भेज सकते है।

आओ आप भी हमारे साथ इस दिव्यांगो की प्रगति में हमारा साथ दो।

दिव्यांग सेतु
मासिक पत्रिका

अगस्त : 2019, पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष : 3 अंक : 32

✦ प्रेरणास्त्रोत और संपादक ✦

संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

✦ सह-संपादक ✦

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

✦ संपर्क-सूत्र ✦

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

✦ मुद्रक ✦

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200

न हाथ, न पैर, फिर भी हैं एक काबिल अफसर

एक हादसे की वजह से राजा महेंद्र प्रताप ने 5 साल की उम्र में ही अपने दोनों हाथ और पैर खो दिए थे। इसके कारण उन्हें 10 साल घर में ही बिताने पड़े। वे स्कूल तक नहीं जा सके। लेकिन आज वे ऑयल एंड नेचुरल गैस कॉर्पोरेशन (ONGC) के अहमदाबाद ऑफिस में फाइनेंशियल एंड अकाउंट्स ऑफिसर की पोस्ट पर हैं। जॉब पर लगने से पहले उन्होंने फाइनेंस में एम.बी.ए. किया है।

कैसे हुआ था हादसा :-

29 साल के प्रताप मूलत: हैदराबाद के रहने वाले हैं। जब वे 5 साल के थे, तब दोस्तों ने एक शर्त लगाई कि खुली इलेक्ट्रिक रॉड को मोड़ नहीं सकते। चूंकि उस समय उनमें उतनी समझ नहीं थी। इसलिए उन्होंने वह शर्त स्वीकार कर ली। लेकिन वे जैसे ही उस रॉड को मोड़ने के लिए गए, वैसे ही हाई वोल्टेज करंट की चपेट में आ गए। इससे उनके दोनों हाथ और पैर भयंकर रूप से झुलस गए। इस वजह से उन्हें काटना पड़ा।

स साल तक घर से बाहर नहीं निकले :-

इस घटना के बाद प्रताप एक तरह से घर में ही कैद होकर रह गए। उन्होंने दस साल तक घर के बाहर कदम तक नहीं निकाला। जाहिर सी बात है कि वे स्कूल भी नहीं जा सकते थे। यहां तक कि उनके पिता भी उन्हें बोझ समझने लगे थे। घर में कोई आता तो पिता उनसे मिलने भी नहीं देते। पिता को शायद उनसे मिलवाने में शर्म आती थी।

स्पेशल सैंडल बनवाई और घर से बाहर निकले :-

प्रताप ने दसवीं और बारहवीं की परीक्षा की पढ़ाई घर से ही की। वे केवल परीक्षा देने ही बाहर जाते थे। घर से बाहर चलने के लिए उन्होंने एक कॉबलर से स्पेशल सैंडल बनवाई। इसके लिए भी कोई कॉबलर तैयार नहीं था। लेकिन अंतत: एक कॉबलर इसके लिए राजी हो गया। हैदराबाद की ओस्मानिया यूनिवर्सिटी से उन्होंने पहले Bcom और फिर फाइनेंस में MBA किया। MBA के लिए प्रताप को नेशनल सेंटर फॉर प्रमोशन ऑफ इम्प्लॉयमेंट फॉर डिसेबल्ड पीपुल से स्कॉलरशिप मिली थी।

घुटनों के बल चलना सीखा, कोहनियों से लिखना

प्रताप 16 साल की उम्र तक स्कूल नहीं जा सके। इनकी तीन बहनें थी जिन्होंने काफी सपोर्ट किया। प्रताप उन्हीं की बुक्स से पढ़ते। थोड़े बड़े हुए तो घुटनों के बल चलने लगे। लेकिन इस प्रयास में उनके घुटने छिल जाते। लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। अंतत: उन्होंने घुटनों के बल चलना सीख लिया। जबड़ों और कोहनियों की मदद से उन्हेंने चीजों को पकड़ना और उठाना सीखा। शुरू में उन्हें काफी दिक्कतें हुई, लेकिन आज वे कोहनियों की मदद से लिख लेते हैं और कंप्यूटर ऑपरेट कर लेते हैं। आज ONGC के दफ्तर में वे कंप्यूटर पर बड़ी कुशलता से काम करते नजर आते हैं। प्रताप बगैर किसी की सहायता से चल लेते हैं। यहां तक कि वे पब्लिक ट्रांसपोर्ट में भी आसानी से सफर कर लेते हैं। वे कंपनी द्वारा दिए गए क्वार्टर में रहते हैं और कपड़े धोने से लेकर नाश्ता बनाने तक का काम खुद करते हैं।

नौकरी के लिए शुरू में कोई तैयार नहीं हुआ :-

MBA करने के बाद प्रताप के पास इंटरव्यू के लिए कई कॉल आते, लेकिन जब इंटरव्यूअर उन्हें देखता तो उनका एटिट्यूड बदल जाता। कोई भी यी मानने को तैयार नहीं था कि वे उन्हें सौंपा गया काम पूरा कर सकते थे। कई लोगों ने इसी कारण उन्हें नौकरी देने से मना कर दिया। लेकिन प्रताप ने हार नहीं मानी। वे जॉब की तलाश में लगे रहे। अंतत: उन्हें नेशनल हाउसिंग बैंक में असिस्टेंट मैनेजर की जॉब मिली। बाद में वे ONGC अहमदाबाद में फाइनेंस एंड अकाउंट्स ऑफिसर बने।

धीरे-धीरे प्रताप के प्रति लोगों का नजरिया बदलने लगा। आज उनके सभी सहयोगी उनके टैलेंट और वर्किंग कैपिसिटी की तारीफ करते नहीं थकते। जिस पिता ने उम्मीद छोड़ दी थी, उनका भी नजरिया आज बदल गया है।

एक अनोखी माँ - आकांक्षा

जिंदगी को आसान बनाने के लिए सिर्फ ख़ुद को मजबूत बनाना पड़ता है। कुछ ऐसा ही मानना है राजकोट स्थित एक दिव्यांग बच्चा 'आरुष' की माता आकांक्षा का।

हालाँकि, इस माँ को अपने बच्चे के लिए स्पेशियली एबल्ड, डिफरेंटली एबल्ड बच्चे आदि शब्दों का उपयोग करने की आवश्यकता नहीं होती है। आकांक्षा का मानना है कि भगवान ने आपको कुछ खुबीओ के साथ और कुछ कमियों के साथ बनाया है। ये बच्चे भी कमियों और खुशी के योग हैं, फिर उनके लिए ऐसे शब्द क्यों ? हो सकता है कि एक सामान्य व्यक्ति जो अपनी कमियों को सुरक्षित रूप से कवर कर सकता है पर ईतनी शक्ति इन बच्चों में नहीं है। ये बच्चे केवल मासूमियत, निस्वार्थ प्रेम और खुलेपन की भाषा समझते हैं और बोलते हैं। इन बच्चों के प्रति हमारा पहला कर्तव्य होना चाहिए कि हम उन्हें समाज में भी पूरी तरह से स्वीकार करें। एक वेल सेट वर्किंग वुमन आकांक्षा जब माँ बनी तब से अपनी प्रोफ़ेशनल लाइफ़ को भूल कर उन्होंने अपना जीवन आरुष और उनके जैसे कई बच्चों के लिए समर्पित कर दिया। जब एक माँ को पता चलता है कि उसका बच्चा अन्य बच्चों से कुछ अलग है, तो इस माँ के पास दो विकल्प हैं या तो इस आघात से टूट जाना या तो इस सदमे से बाहर आ कर इस स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करना, इसके उपचार पर काम करना और समझदारी से इस स्थिति को यथासंभव आसान बनाने के लिए स्वीकार करना। आकांक्षा ने यह दूसरा ऑप्शन लिया। वह आरुष के पुनर्वास के लिए रामकृष्ण आश्रम स्थित शरदा पुनर्वास केंद्र में शामिल हुए। जहाँ उन्होंने थेरपी के साथ अपने बच्चे के पुनर्वास के संबंध में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त की, हर डॉक्टर, चिकित्सक और मनोवैज्ञानिक से कुछ न कुछ सीखा। इंटरनेट से पढ़ाई और शोध के साथ, धीरे-धीरे अपने ही बच्चे के चिकित्सक, विशेष शिक्षक बन गए।

उन्होंने इस ज्ञान और अनुभव को स्वयं तक सीमित नहीं रखा, बल्कि अन्य माता-पिता के साथ साझा करने का निर्णय लिया। इसके लिए उन्होंने व्हाट्सएप पर विशेष बच्चों के "डार्लिंग एंजेल्स" का एक ग्रुप बनाया।यह ग्रुप सभी माता-पिता के लिए अपने बच्चों से संबंधित जानकारी साझा करने, अपने स्वयं के प्रश्न पूछने, अपने स्वयं के अनुभव साझा करने का एक माध्यम बन गया।

कुछ समय में ही यह ग्रुप में माता-पिता की संख्या में वृद्धि हुई तो आकांक्षा ने ग्रुप के लिए मीटिंग करना शुरू किया। इस मीटिंग में, माता-पिता एक-दूसरे से कुछ नया सीखते हैं, कभी-कभी वे एक-दूसरे से प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं, कभी-कभी इस सभा द्वारा, जब माता-पिता इस तरह के कई अन्य माता-पिता से मिलते हैं, तो उनके यह विशेष जीवन को एक सरल और अच्छा जीवन जीने के लिए सहारा बनता था। इस बैठक में, सरकार से बच्चों को मिलने वाली सुविधाओं और लाभों के बारे में जागरूकता बढ़ाने का प्रयास किया गया। उन्होंने बच्चों को एक निरामया पॉलिसी देने के लिए ॐकार फाउंडेशन से संपर्क किया, और पिछले दो वर्षों से इन बच्चों को निरामया पॉलिसी देने की आकांक्षा कार्यरत है। आज इस ग्रुप ने तीन साल पूरे कर लिए हैं और ग्रुप में 400 से अधिक माता - पिता जुड़े हुए हैं।

आकांक्षा की इस निस्वार्थ सेवा से प्रेरित होकर, ग्रुप के कुछ परिवार के सदस्यों ने भी स्वेच्छा से सेवा में शामिल होने का निर्णय किया। ग्रुप बना उसके डेढ़ साल बाद तक साहिल पारेख की माता और आयुष राठोड के पिता इस ग्रुप में अपनी सेवा के लिए तैयार हो गए। यश्वी वडिया के पिता ने बच्चों के UID कार्ड की ऑनलाइन अर्जी और RTE में इन बच्चों के एडमिशन के लिए अर्जी करने के लिए कार्य किया और मान्या ठक्कर के परिवार ने इस ग्रुप के बच्चों के आनंद उल्लास के लिए २५ दिसंबर क्रिसमस के दिन पार्टी का आयोजन किया. चाहना चोटाई के पिता भी यह सब कार्य में अपना यथा शक्ति योगदान देने लगे।

इस तरह इस समय में परिवार के अभिभावकों की जागरूकता के लिए कई अन्य गतिविधियों का आयोजन किया गया। जैसे की अलग-अलग डॉक्टर, चिकित्सक, मनोवैज्ञानिक, विशेष शिक्षक आदि को बुला कर सेमिनार आयोजित करना। निरामया पॉलिसी और उनके दावे मंजूर करवाना, यूडीआईडी कार्ड, आरटीई प्रवेश, आदि में मदद करना। बच्चों से संबंधित विभिन्न उपचारों के लिए सेमिनार और कार्यशालाएं आयोजित करना। राजकोट में आयोजित विशेष बच्चों के खेलकुंभ में भाग लेने के लिए बच्चों को प्रेरित करने के लिए, श्री शैलेशभाई पंड्या इस ग्रुप को काफ़ी सहाय करते हैं।

आकांक्षा ने कुछ लोगों से शुरू किया यह ग्रुप का यह जो कार्यक्षेत्र बढ़ गया है तो इन सब का श्रेय सबसे पहले वो अपने पुत्र आरुष को देती है। उस के कारन ही इन बच्चो की सेवा करने की प्रेरणा और प्रोत्साहन मिला। इसके साथ आकांक्षा के पति जिग्नेश सचाणिया भी हर कार्य में उसके साथ सम्पूर्ण सहकार देतें रहते है उनका और ग्रुप के सब सदस्य जो हमेंशा साथ देते है उनको भी इस कार्य का श्रेय जाता है।

औरों के सुख में सुखी होना सिखाती है भारतीय संस्कृति - मुख्यमंत्री

11 सेवाव्रतियों को धरती रत्न अवार्ड से मुख्यमंत्री ने किया सम्मानित

अहमदाबाद, मुख्यमंत्री श्री विजय रुपाणी ने कहा कि व्यक्ति से समष्टि, एकांगी नहीं वरन औरों के सुख में सुखी और दुख में दुखी होने का भाव ही भारतीय संस्कृति में निहित सेवाभाव को दर्शाता है। शनिवार शाम आशीर्वाद फाउंडेशन की ओर से आयोजित सातवें धरती रत्न अवार्डसमारोह में 11 सेवाव्रतियों का मोमेंटो और शाल भेंटकर सम्मान करते हुए उन्होंने यह बात कही। श्री रुपाणी ने कहा कि आज समाज में सेवा का भाव कम होता जा रहा है, तब समाज के दिव्यांगजनों और जरुरतमंद लोगों के लिए निस्वार्थ भाव से सेवा कर इन अवार्ड विजेताओं ने समाज के समक्ष एक आदर्श पेश किया है। उन्होंने कहा कि योग्य काम, योग्य व्यक्ति और योग्य व्यवस्था द्वारा हो तो पैसे के अभाव से कोई कार्य रुकता नहीं है। समाज के भीतर से सेवा करने वाला हाथ मिल ही जाता है।

उन्होंने कहा कि दरिद्रनारायण की सेवा एक ईश्वरीय कार्य है। भारतीय संस्कृति में एसे परमार्थ कार्य को ही ईश्वरीय कार्य के रुप में वर्णित किया गया है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष भारतीय संस्कृति में वर्णित चार पुरुषार्थ हैं। पर पीडा के एसे सेवा कार्य से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। मुख्यमंत्री ने कहा कि दूसरे का दुख देखकर जिसके ह्दय में करुणा पैदा होती है, उससे सेवा का भाव ही सच्चा सेवा भाव है। श्री रुपाणी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति में दूसरों की पीडा समझने का, उनकी सेवा करने का भाव होता ही है, लेकिन आज की तेज रफ्तार जिंदगी में व्यस्तता के बीच एसे कार्य मुमकिन नहीं हो पाते। एसे में, दया, अनुकंपा और प्रेम के गुणों से अवार्ड प्राप्त करने वाले लोगों ने कार्य किया है वह बधाई के पात्र हैं। उन्होंने कहा कि समाज में पैसे व प्रतिष्ठा की होड मची है। परन्तु विधि की वक्रता यह है कि पैसा और प्रतिष्ठा साथ नहीं चलते। आज हुआ सम्मान उन सेवाभावी लोगों का नहीं बल्कि सेवा कार्यो का सम्मान है। एसे सेवा कार्यो की सुगंध समाज के अन्य लोगों की भी प्रेरित करेगी। डो. कुमारपाल देसाई ने कहा कि आशीर्वाद फाउंडेशन की गतिविधियों का विस्तार हुआ है। प्रार्थना के लिए जुडे दो हाथ के बजाय सेवा के लिए आगे बढे दो हाथ अधिक महत्वपूर्ण हैं, एसा इन सेवाभावियों ने सिद्ध किया है।

आशीर्वाद फाउंडेशन के चेयरमैन आर. एस. पटेल ने स्वागत भाषण में कहा कि एज्युकेशन ट्रस्ट 42 वर्षों की सेवा के बाद फाउंडेशन के नेतृत्व में कार्य कर रहा है, यह बीज से वट वृक्ष तक का सफर है। उन्होंने कहा कि हमारा ट्रस्ट राज्य सरकार के साथ मिलकर कार्य करता है। जहां तक सेवा नहीं पहुंचती, वहां हमारी सेवा आम लोगों को प्रदान करते हैं। रीडिंग रुम, मेडिकल काउंसलिंग, मेडिकल वैन, दवाई दुकान, होस्पिटल की सेवा आदि के जरिए अधिकाधिक लोगों तक पहुंचने का प्रयास किया है। धरती रत्न अवर्ड प्राप्त करने वाले रसिकभाई रावल और भद्राबेन सवाई ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् विद्युत जोषी, सेवानिवृत्त न्यायाधीश जे. सी. उपाध्याय, किरणभाई सी. पटेल, कनुभाई पटेल, पी. एस. पटेल सहित कई अग्रणी, समाज श्रेष्ठी तथा बडी संख्या में नगरजन उपस्थित थे। धरती रत्न अवार्ड सुभाष आप्टे को मंदबुद्धि बच्चों की सेवा के लिए, रसिकभाई रावल को श्मशान घाट स्थापित करने, सुधीर मोदी को रोगी - दुखियों की सेवा के लिए, आशाबेन पटेल को जरुरतमंद लोगों को कानूनी सेवा - सलाह के लिए, निलेष पंचाल को मंदबुद्धि बच्चों की सेवा के लिए, लालजी प्रजापति को नेत्रहीन, दिव्यांगों की सेवा के लिए, केशवभाई गोर को स्वामी विवेकानंद के विचारों के प्रचार - प्रसार के लिए, देवेंद्र लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी को फूटपाथ पर रहने वाले दुखियों की सेवा के लिए, भद्राबेन सवाई को अकाल और आपदा में सेवा के लिए, रमिलाबेन गांधी को गरीब बच्चों के लिए निःशुल्क छात्रावास के लिए तथा प्रियवदन शाह को नेत्रदान, देहदान के लिए लोगों को समझाने व जागरुत करने के लिए प्रदान किया गया।

ॐकार दिव्यांग ट्रेनींग डे-केर सेन्टरने मनाया विद्यार्थी का जन्मदिन

गुरुपूर्णिमा के दिन ॐकार दिव्यांग ट्रेनींग डे-केर सेन्टर के विद्यार्थी धनश्री पाठक का तिथि के अनुसार जन्मदिन भी था। धनश्री पाठक का जन्मदिन मनाने के लिए संस्था की औरसे उस दिन केक ला कर सभी बच्चों को साथ बिठा कर, धनश्री का जन्म दिन मनाया। सभी बच्चोने ताली बजा कर धनश्री को शुभकामनाए दी और धनश्री को केक भी खिलाया। गुरुपूर्णिमा के अवसर पर बच्चो को खाने में पूरी-सब्जी और केक संस्था द्वारा दिया गया था। और धनश्री के माता-पिता की और से सभी बच्चो को मिठाई दी गई थी।

ॐकार दिव्यांग ट्रेनींग डे-केर सेन्टर ने मनाया गुरु वंदना कार्यक्रम

ॐकार दिव्यांग ट्रेनिंग डे केर सेंटर में गुरुपूर्णिमा के अवसर पर डे-केर सेन्टर के विद्यार्थी बच्चों और उनके माता-पिता की उपस्थिति में दिनांक : १६-०७-२०१९ मंगलवार को गुरु-वंदना कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। संस्था के बच्चों ने प्रथम प्रार्थना की, जिसमें 'गुरु ब्रह्मा...' श्लोक का गान किया। बाद में विद्यार्थी बच्चों ने गुरूजी को वंदन किया और संस्था के शिक्षकों को गुरु के रूप में वंदन कर के आशीर्वाद लिया। जिन बच्चों के माता-पिता उपस्थित थे उनके भी आशीर्वाद लिए।

छत्तीसगढ़ /दिव्यांग चंचल ने देश भक्ति गीत पर एक पैर पर डांस कर लोगों का मन मोहा।

धमतरी जिले के एकलव्य खेल मैदान में गणतंत्र दिवस पर आयोजित मुख्य समारोह में सिहावा विधानसभा की विधायक डॉ. लक्ष्मी ध्रुवे ध्वजारोहण कर परेड की सलामी ली। इस मौके पर प्लाटून 13 का मार्चपास्ट समेत 9 स्कूल, आश्रम छात्रावास के करीब 500 बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम में हिस्सा लिया। इसमें दिव्यांग छात्रा चंचल ने देश भक्ति गीत कहते हैं हमको प्यार से इंडिया वाले गीत पर एक पैर पर डांस कर सबका ध्यान खींच लिया।

मूक बधिर बच्चों ने भी देश मेरा रंगीला गीत पर इशारों पर डांस किया था। ये नजारा भी काफी अट्रैक्टिव रहा। रेड क्रॉस सोसाईटी की ओर से हुए नाटक में आर्गन ट्रांसप्लांट की संभावनाओं और उसकी जरूरतों पर सबका ध्यान खींचा गया। इसके अलावा छात्र-छात्राओं ने मंच पर छत्तीसगढ़, राजस्थान, गुजरात, असम समेत कई राज्यों के लोकनृत्य प्रस्तुत किया।

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट द्वारा आयोजित दिव्यांग जीवनसाथी महा-पसंदगी संमेलन

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट आयोजित दिव्यांग जीवनसाथी महापसंदगी संमेलन को अहमदाबाद में आयोजित किया जाएगा। इस महा-पसंदगी संमेलन में अस्थिविषयक, मूक-बधिर और अंधजन जैसी दिव्यांगता वालें दिव्यांग युवक और युवती लाभ ले सकते है। इस पसंदगी संमेलन में भाग लेने इच्छुक के फॉर्म, आवश्यक माहिती और सबूत दिनांक: ३१-०८-२०१९ तक निम्नलिखित पते पर सुबह ११.०० से ५.०० दौरान दे सकते हो।

स्थल

सुमेल, हाउस नं. - D 48, चौथी मंझिल, बिजनेस पार्क, चामुंडा ब्रिज कॉर्नर के पास, असारवा, अहमदाबाद. मोबाईल - 93275 69975

दिव्यांग मंजीत ने अरब सागर में 40 किलोमीटर तैरकर लिम्का बुक में दर्ज किया नाम

गांव के जोहड़ में तैराकी करने वाले 24 साल के दिव्यांग मंजीत कादियान ने अपनी पैरा स्विमिंग को आगे बढ़ाते हुए अब देश के पांच अन्य पैरा तैराकों के साथ मुंबई के अरब सागर में 40 किलोमीटर तैरकर लिम्का बुक आफ रिकॉर्ड में नाम दर्ज करा लिया है। बचपन से ही एक पैर से दिव्यांग मंजीत ने 11 अप्रैल को अपने साथियों के साथ मिलकर ये कामयाबी हासिल की। मुंबई के धमतल (अरब सागर) से समंदर में सीटएसटी स्टेशन के पास भाऊरा ढाका तक की 40 किलोमीटर की दूरी 9 घंटे 8 मिनट 39 सेकंड में तय कर नेशनल लिम्का बुक रिकॉर्ड बनाया गया है। देश में यह अपनी तरह का पहला अनूठा रिकॉर्ड है। इससे पहले इतनी दूरी का रिकॉर्ड 12 घंटे का था। मंजीत समेत टीम के सभी छह सदस्यों ने अपनी अदम्य इच्छा शक्ति के दम पर ये रिकॉर्ड बनाया। तैराकी टीम में मंजीत कादयान के अलावा जगदीश चन्द्र तेली, राजस्थान, गोरख शिन्दे, महाराष्ट्र, विनोद जाटव, मध्यप्रदेश, इंद्रेश पलान, गुजरात, गीतांजली चौधरी महाराष्ट्र से थीं। पूरे अभियान के दौरान लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड की टीम साथ रही। उन्होंने पूरे अभियान को शूट भी किया जिसकी डाक्यूमेंट्री भी बनाई जाएगी। इस इवेंट की समाप्ति पर महाराष्ट्र पैरा स्विमिंग के प्रेसिडेंट राजा राम घाट और वाइस प्रेसिडेंट सत्य प्रकाश तिवारी ने मोमेंटो और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। गांव में एक साधारण किसान छाजू राम का बेटा मंजीत बीते तीन साल से पैरा स्विमिंग कर रहा है। उसके नेशनल में 12 मेडल और स्टेट में 16 मेडल हैं।

दूबलधन निवासी मंजीत कादियान।

कैलिफोर्निया और इंग्लैंड का चैलेंज किया स्वीकार :

मंजीत कादियान ने कैलिफोर्निया में कैटरीना चैनल पार करने का चैलेंज भी स्वीकार कर लिया है। मंजीत 20 जून को इसके लिए यूएसए रवाना होंगे। यह कैटरीना चैनल 40 किलोमीटर का है। यहां खतरनाक शार्क मछलियां है और कोल्ड वॉटर 10 से 12 डिग्री सेल्सियस तक रहता है। इसके अलावा मंजीत ने 36 किलोमीटर का इंग्लिश चैनल पार करने का चैलेंज भी स्वीकार किया है जिसके लिए वे सितंबर माह में इंग्लैंड रवाना होंगे। इस चैनल में कोल्ड वॉटर 8 से 10 डिग्री सेल्सियस तक रहता है। अब मंजीत की दुविधा यह है कि इन दोनों ही देशों में जाने के लिए उसे आर्थिक रूप से मदद की जरूरत रहेगी, लेकिन अपने देश के लिए मेडल जुटाने और रिकॉर्ड बनाने के लिए उसे स्पॉन्सर नहीं मिल रहा है।

मंजीत ने बताया कि आम दिव्यांगों की तरह उसका जीवन भी गांव में इसी तरह बीत जाता लेकिन तीन साल पहले गांव के सरकारी अस्पताल में ड्यूटी करने वाले मेडिकल ऑफिसर डॉ. मनीष पूनिया ने उसकी किस्मत बदलने का काम किया। मंजीत ने कहा कि अब उसका टारगेट 20 20 में होने वाले पैरा ओलंपिक का है। इसके लिए वह तैयारियां कर रहा है और उसे उम्मीद है कि वह देश के लिए जरूर मेडल लाएगा।

गायत्री विकलांग मानव मंडल द्वारा आयोजित

पर्यावरण दिन

गायत्री विकलांग मानव मंडल द्वारा आयोजित 'पर्यावरण दिन' के अवसर पर वृक्षारोपण का आयोजन किया गया था। संत, महंत, राजकीय नेता और लोगों के द्वारा इस वृक्षारोपण के आयोजन में इस संस्था द्वारा गरीब, निराधार, माँ - बाप विहीन पढ़ती बच्चियाँ के हाथ से वृक्षारोपण किया गया। इस आयोजन में J C क्लब और अन्य महेमान द्वारा भोजन समारोह भी किया गया। यह प्रसंग पर बच्चों को पौधा उगाने में बड़ा ही आनंद आया। आनेवाली पीढ़ी का उज्जवल भविष्य के लिए सब बच्चों ने घर के आँगन में एक - एक पौधा उगाओ प्रदुषण मिटाओ और छाँव दूसरों को दो, यह उद्देश्य से घर के आँगन में पौधा उगाने के लिए मुफ्त में वितरण किया गया। बच्चो ने संकल्प भी लिया की इन पौधों को भी बच्चो की तरह संभालेंगे।

गायत्री विकलांग मानव मंडल द्वारा आयोजित

आंतरराष्ट्रीय योग दिन

आंतरराष्ट्रीय योग दिन को गायत्री विकलांग मानव मंडल द्वारा विधवा, वृद्ध, निराधार और दिव्यांग बहनों को साड़ी का वितरण किया गया J C क्लब की तरफसे सबको नास्ता दिया गया। साड़ी के वितरण के इस कार्यक्रम में दिव्यांगजनों को उनकी जरुरत देखते हुए ट्राइसिकल का वितरण भी किया गया। ट्रस्टीजन और दानवीर दाताओं ने भी इस कार्यक्रम में उपस्थित हो कर सहकार दिया। संस्था के प्रमुख सुनीलभाई जे गीगल ने बताया की इस साड़ी वितरण के कार्यक्रम दौरान लोगों को सरकारश्री द्वारा दिए जाने वाले अन्य लाभ के बारे में समझाया और साथ में योग भी सिखाया गया। रुक्ष्मणीबेन जे शाह ने यह भी बताया की संस्कारी नगरी वड़ोदरा में आने वाली पीढ़ी के लाभ के लिए बच्चों द्वारा वृक्षारोपण कर के उनमें संस्कारो का सिंचन किया गया।

मालवानी मयूरी का बुलंद हौंसला

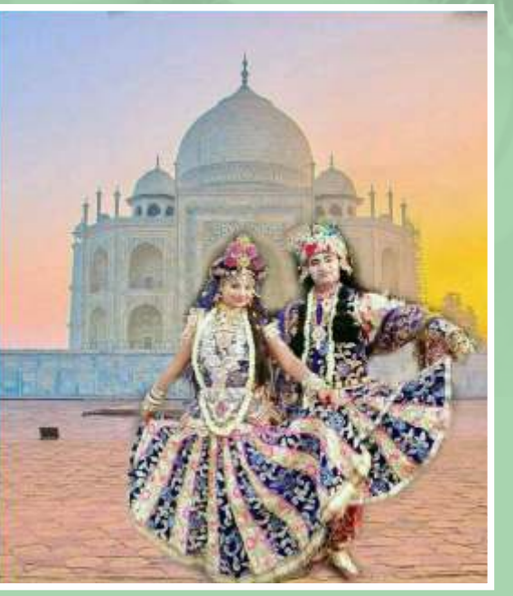

मध्य प्रदेश के इन्दोर के स्थित ललित ठाकोर की धर्मपत्नी मालवानी मयूरी ने अपने नाम की एक अलग पहचान बनाई है। कोई हादसे में एक पैर गंवाने वाली इस महिला ने इस हादसे के बाद भी हौंसला नहीं छोड़ा। मालवानी मयूरी जी ने बड़ी हिम्मत के साथ नृत्य में महारथ हांसिल की है। एक पाँव पर नृत्य करते हुए वो अपने सिर पर ५१ घड़े रखती है। उनकी यह नृत्य निपुणता देख कर लोग अपने दांतो तले उंगली दबा देते है। एक सामान्य महिला से भी ज्यादा चौकसाई दिखने वाली मालवानी मयूरी जी विश्व में टीवी सीरियल के माध्यम द्वारा छा गई है। इस माध्यम द्वारा उनको काफी एवॉर्ड भी मिले है। अभी वड़ोदरा में गायत्री विकलांग मानव मंडल द्वारा आयोजित समूह-विवाह लग्नोत्सव में मालवानी मयूरी जीने अपनी दो बेटिओं और अपने पति ललित ठाकोर जो खुद भी अच्छे नृत्यकार है उनके साथ उपस्थित थे। उनका पूरा परिवार अच्छा और संस्कारी है। उनको देख कर सचमुच लोगों को प्रेरणा मिली। उन्हों ने कहा की 'हम किसी से कम नहीं, हम विकलांग नहीं हम दिव्यांग है।

दिव्यांग श्रीमति ऋक्षमणी देवी की अमरनाथ यात्रा

उपरोक्त विषय हर कोई यात्रा करना किस्मत की बात है। श्रीमती रुक्षमणी देवी जगदीशचंद्र माहेश्वरी उनको अमरनाथ यात्रा करने की ईच्छा थी लेकिन कोई सुविधा अशक्य थी फिर भी उन्होने हिम्मत करके अमरनाथ की यात्रा करने का निश्चय ठान लिया। मुझे ये यात्रा जरुर करनी है। मरने का कोई डर नही कारण की वो दोनो पैरो से दिव्यांग है। फिर चठाई मै और आगे बठने मे बर्फ पर चठने और गिरने का खतरा था फिर भी उन्होने पालखी मै बैठकर बहोत कठिन यात्रा सरल करने का अनुभव महसूस किया। दूसरे लोगो को जाते देखकर मैरे मे भी हिम्मत आई। यात्रा भले कितनी कठिन हो फिर भी दर्शन करने जाना जरुर है। मनमे विश्वास और आत्मविश्वास के साथ अपना मनोबल मक्कम करके जैसे तैसे यात्रा ऊपर चठने और दर्शन करने का अच्छा मौका मिला वहाँ पर सैनिक लोगोने मेरा हाथ पकड के बरसती बरसाद मैं मुझे दर्शन कराया और मुझे बहोत आनंद आया। मुझे बहोत गौरव है। हम विकलांग नही दिव्यांग है। जितने भी दिव्यांग है उनको दर्शन करने का लाभ जरुर लेना चाहिए ये मेरा अनुभव है।

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

(N.G.O.)

संचालित

ॐकार दिव्यांग ट्रेनींग डे-केर सेन्टर

मानसिक दिव्यांग बच्चों के लिए नि:शुल्क तालीमी संस्था

शाला में प्रवेश के लिए संपर्क करे

सुमेल ५, हाउस नं.: 48/डी, बिझनेश पार्क,
चामुंडा ब्रीज कोर्नर, असारवा,
अहमदाबाद-380 016
मो. : 99749 55125, 99749 55365

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर